Chap-1

- प्रथम अध्याय -

- "विषय -प्रवेश" -

प्रथम-अध्याय

विषय-प्रवेश

जीवन एवं जीवन-मूल्य

जीवन-मूल्य देश विशेष या समाज विशेष की संस्कृति के महत्वपूर्ण पक्ष हैं, जो उसके कार्य-कलापों का नियमन ही नहीं करते हैं, अपितु उसमें चेतना का सन्निवेश भी करते हैं। इन्हें समझने के लिए सर्वप्रथम 'जीवन' शब्द पर विचार कर लेना आवश्यक है। "सामान्यत: जीवन शब्द का प्रयोग जीवधारियों के कार्य -कलापों उनकी मान्यताओं, विश्वासों और उनके अनुभवों के लिए किया जाता है। मूलत: जीव और परिवेश के मध्य क्रिया प्रतिक्रिया का ही दूसरा नाम जीवन है"[1]। टाल्सटाय "जीवन" को हास-रूदन मिश्रित मानते हैं[2]। एस॰जी॰वेल्स ने जीवन को चेतना शब्द द्वारा अभिव्यक्त किया है। उनके अनुसार " स्पष्टत: जीवन को विद्वान आशा एवं निराशा की दृष्टि से देखते हैं क्योंकि जीवन न तो सुखमय और न दुखमय ही जीवन है, बल्कि क्रियाओं का समन्वय है। विलियम शेक्सपीयर ने जीवन के विषय में कहा कि अच्छाई एवं बुराई ही जीवन का स्वरूप है[3]। यही कारण है कि जीवन एक संयोग-भाग्य तथा चरित्र के सुत्र से बना हुआ एक रहस्यमय वस्त्र के समतुल्य है, जिसमें गति है, और जहाँ गति नहीं, वहाँ जीवन नाम की कोई वस्तु नहीं है।

भारतीय चिन्तकों ने जीवन को दो मान्यताओं से सम्बद्ध किया है - वर्तमान और भविष्य की भावना प्रथम सांसारिक प्राणी भोग या विलासतापूर्ण जीवन की ओर अग्रसर होते हैं। द्वितीय भविष्य की भावना त्याग या वैराग्य मार्ग की पुष्टि करते हैं। यही कारण है कि उपनिषदों में मानव जीवन को यज्ञमय होना श्रेयस्कर माना है। जीवन विश्व चेतना के आकार धारण करने की चेष्ठा है[4]। वस्तुत: जीवन एक सतत: प्रक्रिया है, उसमें गतिशीलता है और जीवन में स्थिरता भी सामान्यत: विद्यमान है एवं परिवर्तनशीलता के साथ साथ संघर्षमय ही जीवन है[5]।

उपर्युक्त विचारकों के मतों के आधार पर उसकी निश्चित सीमा निर्धारित नहीं होती है और न अन्तिम निष्कर्ष पर ही पहुँचा जा सकता है । स्पष्टतः मानवीय जीवन एक रहस्यमय प्रक्रिया है । एतद्विषयक कुछ स्पष्ट तथ्यों को प्रस्तुत कियाजा सकता है :-

(1) गतिशीलता ही जीवन है ।
(2) संघर्षमय ही जीवन है ।
(3) चेतनता (संज्ञा) ही जीवन है ।
(4) सक्रियता में निहित जीवन है ।
(5) सत्यं शिवं सुन्दरं का मार्गावलोकन ही सम्यक् जीवन है ।

अन्ततः अस्तित्व की सम्यक् प्रतिष्ठा के लिए मनुष्य के समस्त कार्य कलाप, आचरण , आचार-विचार, व्यवहार, इच्छा संवेदन अथवा इच्छा संकल्प विकासोन्मुख जीव में आत्म चेतन की अनुभूति एवं शक्ति तथा मानस में मानसिक संकल्प आदि प्रवृत्तियाँ जीवन की अभिव्यक्ति हैं ।

जीवन-मूल्य :

"मूल्य" संस्कृत भाषा का शब्द है । "मूल्य" शब्द "मूल" धातु में यत् प्रत्यय के योग से बना है , जिसका अभिप्रायः केवल किसी वस्तु का मूल्य या कीमत का अंकन करना है[6] । उसे सर्वप्रथम मात्र अर्थशास्त्र (Economics) में मूल्य (Cost) कीमत के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता रहा , किन्तु आज व्यक्तिवादी, सामाजिक , भोगवादी, आर्थिक, नैतिक, राजनैतिक आदि समस्त दृष्टिकोणों से मूल्य का प्रयोग होने लगा । मूल्य से संबंधित मूल्य मीमांसा (Axiology) विज्ञान पर बल देता है । अंग्रेज़ी शब्द "एक्जियोलोजी" (Axiology) मूल्य मीमांसा का पर्याय है । "एक्सियस का अर्थ मूल्य या कीमत से है और "लागस" का मतलब अर्थ, तर्क या मीमांसा से है । मूल्य मीमांसा में मूल्य का स्वरूप और उसकी तात्त्विक सत्ता का विवेचन है । तथ्य (Fact) और "मूल्य(Value) इसके दो पक्ष हैं, एवं दो दृष्टिकोण हैं । तथ्य (Fact) का अभिप्रायः यथार्थ से है । तथ्य पर विचार करना

उस वस्तु का वर्णन और उसका निरूपण उसका गुणावधारण कहा जा सकता है । "मूल्य" का अर्थ आदर्श से है , जिसे हम जीवन का मानदण्ड कह सकते हैं । अनुभवों में मूल्यों का विचार निहित रहता है और ~~मापदण्ड~~ मूल्य मापदण्ड ही होते हैं[7]। अतः "जीवन-मूल्यों" को हम जीवन धर्म या जीवन का माप दण्ड भी कह सकते हैं । आज "जीवन मूल्य" की परिभाषा अत्यंत व्यापक हो गयी है ।

"मूल्य" अंग्रेज़ी के वैल्यू (Value) शब्द का पर्याय है । यह शब्द लैटिन भाषा के "वैलर" (Velere) से बना है ,जिसका तात्पर्य उत्तम, श्रेष्ठ या सुन्दर (Well) होता है । अतः इसका अभिप्राय यह हुआ कि जो कुछ भी व्यक्ति विशेष की इच्छा की अभिव्यक्ति है वही वस्तु मूल्य से संबंधित है । अर्थात् इच्छित वस्तु ही मूल्य है[8]. अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण से वस्तु विनिमय में प्रदत्त धनराशि से अथवा दूसरे शब्दों में - अभाव की पूर्ति हेतु ही मूल्यों की उत्पत्ति होती है क्योंकि अभाव कीपूर्ति के लिए व्यक्ति क्रियाशील होता है और कार्य की समाप्ति पर मूल्य निर्मित होते हैं । "मूल्य" विषय से ही संबंधित नहीं बल्कि हमारे जीवन-विषय से भी संबंधित होते हैं[9]. वस्तुतः "मूल्य" वस्तु के अभाव में प्रयोग होता है । पदार्थ एवं मूल्यानुभूति के बीच का अस्तित्व ही मूल्य है[10].

"मूल्य" विषयक धारणा को समाजशास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक "सहजज्ञान" और "अभिलाषा" को लेकर स्पष्ट करते हैं । इससे आन्तरिक अवधारणा या संकल्प को ही मूल्य माना जा सकता है , किन्तु यह वास्तविक कारण नहीं है क्योंकि "मूल्य" वस्तु-सापेक्ष अर्थात् बाह्य ही होते हैं । प्रो० सोरले नैतिक मूल्यों के निर्माण में ईश्वरीय सत्ता अर्थात् आध्यात्मिक मूल्यों का ही योगदान मानते हैं[11].

आज "मूल्य" की परिभाषा अत्यंत जटिल हो गयी है क्योंकि "मूल्य" शब्द दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र, विज्ञान शास्त्र, मनोविज्ञान शास्त्र, अर्थशास्त्र , धर्म एवं आध्यात्मिक आदि से संबंधित

होने के कारण बहुमुखी हो गया है । "मूल्य" शब्द किसी एक बिन्दु तक निश्चित एवं विशिष्ट अर्थ की जानकारी से सम्पृक्त नहीं है, बल्कि अपनी अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा अभीष्ट की प्राप्ति के लिए इस शब्द का प्रयोग विभिन्न रूपों में किया जा रहा है [12]. लास्की और मार्शल ने "मूल्य" के अस्तित्व को परमात्मा के अस्तित्व से संबंधित मानकर आध्यात्मिक मूल्यों को महत्त्व दिया है । उनके अनुसार "सद ही पूर्ण मूल्य है । परमात्मा एवं उनकी सत्ता ही मूल्यों को स्थापित करती है"[13]. मानविकी के संदर्भ में "मूल्य" एक जीवन दृष्टि की वैचारिक इकाई है और सामाजिक, धार्मिक व नैतिक पक्ष पर बल देता है, जो प्रतिमान से संबंधित होता है ।[14]

मनोवैज्ञानिक मूल्य सिद्धांत में मूल्यों को अति विस्तृत माना गया है वह एक ओर आत्मगत मूल्यों को स्वीकारते हैं [15]. तो दूसरी ओर मनोविज्ञान "मूल्य" को मानवीय इच्छाओं की संतुष्टि मात्र मानता है [16]. यथार्थवादी "मूल्य" को सत्य, अच्छाई एवं सौन्दर्य से संबंधित मानता है [17] प्रैग्मैटिक विचारक "मूल्य" को उपयोगिता के अन्तर्गत समाहित करते हैं [18] भारतीय दर्शन मोक्ष को ही चरम मूल्य मानते हैं । मैयनंग अनुभूतिगत मूल्यों को स्वीकरता है [19]. हेडे न तो वस्तुनिष्ठ मूल्यों को मानता है , और न आत्मनिष्ठ मूल्यों को । वे बीच के सामंजस्य को स्वीकार करते हैं । "जो "मूल्य" विषय के व्यक्तिगत चरित्रों पर निर्भर नहीं होते हैं, वही पूर्ण मूल्य हैं [20]. "मूल्य" सैद्धान्तिक या अक्रियात्मक द्वारा ग्रहण नहीं किये जाते हैं"[21] ब्राईटमैन ने "अनुभूत परिस्थिति और तर्कवादी अभिधारणा से उत्पन्न परिस्थिति पर विश्वास करना ही मूल्य है [22]. आदर्शवादी विचारधारा मूल्य को ज्ञान और सत्ता की विशिष्टता मानता है । समस्त विश्व के अर्थ निश्चित के साथ साथ प्रत्येक व्यक्ति ,प्रत्येक घटना और प्रत्येक क्रिया का अर्थ भी निश्चित होता है [23].

जी0ई0 मूर का विश्वास है कि किसी भी वस्तु की अच्छाई या

बुराई के संबंध में एक मत हो सकता है । "मूल्य" जीवन की क्रियाएं हैं, जिन्हें हम स्वयं में मूल्यवान् मानते हैं, क्योंकि "मूल्य" ~~कककककक~~ भावात्मक भी और विषयी भी हो सकते हैं, किन्तु अनुभूति से उत्पन्न और जिनकी कामना हम स्वयं उन्हीं के लिए — करते हैं, जो हमारे जीवन के चरम मूल्यों का निर्माण करता है [24]. वही मूल्य है।

इससे स्पष्ट है कि जीवन मूल्य समाज की आधारशिला है, जिसके बल पर सभ्यता और संस्कृति का भव्य प्रासाद निर्मित होता है । वैसे मूल्य समाज में हमेशा निर्मित और विकृत होते रहे हैं । आदिम युग से भी कतिपय संश्लेषण-विश्लेषण रहे होंगे । समाज के गठन के साथ "मूल्य" ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है [25]. जीवन मूल्य की सतत् प्रक्रिया में चिन्तन से विचार बनते हैं । विचारों से धारणा (Attitude) का जन्म होता है । धारणा से मूल्यों (Values) का निर्माण होता है । प्रत्येक समाज में जीवन और पारस्परिक व्यवहार के संबंध में कतिपय धारणाएं होती हैं । यही धारणायें स्थिर होकर जीवन मूल्य पद पर प्रतिष्ठित होती हैं [26]. एक उदाहरण से इसे समझा जा सकता है :- विवाह के प्रति समाज की उत्तम धारणा रही है । इसलिए समाज की दृष्टि में विवाह महत्वपूर्ण "मूल्य" रहा है । तलाक की धारणा को समाज निषेध मानता रहा था तब तलाक मूल्य का रूप धारण नहीं कर सका किन्तु अब दम्पत्ति के परस्पर मनोमालिन्य की स्थिति में, तलाक की धारणा पनप उठी है । परिणामत: आज "तलाक" मूल्य के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है ।

'जीवन-मूल्य' परीक्षण की जिज्ञासा युग-युगान्तर से अविरल गति से प्रवाहित रही है । सब प्रतिमानों का, सब मूल्यों का स्रोत मानव का विवेक है [27]. जीवन-मूल्यों को जीवन धर्म अथवा जीवन का मापदण्ड (Criteria) भी कह सकते हैं । भारतीय जीवन में चार लक्ष्य या मूल्य माने गये हैं । "मोक्ष" को परम मूल्य माना है, जो मनुष्य की आन्तरिक आध्यात्मिक अनुभूति का प्रतीक है [28].

अतः मूल्य के संबंध में कोई एक निश्चित सीमा व धारणा नहीं है । फिर भी "मूल्य" को समुचित रूप से जानने के लिए सद्वस्तु ,आदर्श, मूल्यानुभूति, प्रतिमान , संकल्प एवं मूल्य का अन्तर समझ लेना परमावश्यक है ।

सद्वस्तु :- (Reality)

सदवस्तु - "तथ्य" या यथार्थ का प्रदर्शित करने वाली वास्तविकता है । दर्शन परम सद्वस्तु का ज्ञान है । "सद्वस्तु" को भारतीय दार्शनिकों ने यथार्थ माना है , जो केवल सत्तामात्र न होकर चैतन्य और आनन्द भी है [29]. "सद्वस्तु" सत्य का यथार्थ प्रतीक है , जिसे अभीप्सित वस्तु भी कहा जा सकता है । "मूल्य" चिन्तन में उपयोगिता एवं आन्तरिक मूल्यानुभूति की जो परिस्थिति आती है , उसका मुख्य कारण मूल्य के अभीप्सित सद्-वस्तु की शोध से साधनगत मूल्य तथा स्वतः मूल्य का रूपान्तर है । उदाहरणर्थ - सदवस्तु जब हमारी अभिलाषा की पूर्ति करती है, तब सामान्यतः मूल्य का रूप धारण करती है । एक तृषित व्यक्ति द्वारा जल की खोज करना एक तथ्य (Fact) है । प्यास की तृप्ति होने पर उसे जल का "मूल्य" बोध होता है । "तथ्य" इस प्रकार "सद्वस्तु" के साथ "मूल्य" का द्योतक हुआ । अतः स्पष्ट है कि सद्वस्तु मूल्य खोज या निर्माण में सहायक है ।

आदर्श :- (Ideal)

अंग्रेज़ी में इसके पर्याय "आइडियल" (Ideal) का अभिप्राय है कि "दपर्ण" और "नमूना" [30]. "नमूना" शब्द का पर्याय "प्रतिरूप" या नार्म (Norm) है , जिसमें मानव अपने प्रतिबिम्ब के रूप में देखता है । यह शब्द हमारे अभीष्ट अर्थ को अभिव्यक्त करने में सफल होता है । प्रदर्शित की गई वस्तु ही "नमूना" हो सकती है और वही आदर्श है । आदर्श हमारे जीवन की अपेक्षित स्थिति का परिचायक है, जबकि "मूल्य" अभीष्ट वस्तु का अनुभव कराता है । "मूल्य" व्यक्ति विशेष की अभिलाषा एवं महत्वाकांक्षा

की पूर्तिमात्र से उद्भूत आनन्द मूलक स्थिति है । "मूल्य" चिन्तन में उपयोगिता और आन्तरिक अभिवृत्तियों की जो स्थिति रही है वह साधनागत मूल्य और स्वत: मूल्य के कारण रही है । "आदर्श" ही धारणा भ्रम मात्र नहीं है वह एक मानसिक स्थिति है, । जो मूल्य संबन्धी समस्या को हल करती है । सदगुण और प्रज्ञा आपमें पूर्ण आदर्श हैं [31]. भारतीय साहित्यकार सदा से ही आदर्शवादी रहा है , वह असद् को सद् में ढालने की ओर प्रवृत्त रहा है क्योंकि मानव को सद्वस्तु के प्रति मोह रहता है ।

भारतीय साहित्य पर आदर्शवाद की गहरी छाप रही , यही कारण है कि भारतीय संस्कृति हमेशा शाश्वत निष्ठामय सूत्र की ओर इंगित करती रही । रीतिकालीन परम्परा में देशकाल व वातावरण का अति प्रभाव रहा है । जिससे विलासिता जन्य "मूल्य" निष्पन्न हुए । समयानुसार मूल्यों में पुन: परिवर्तन आये । आधुनिक हिन्दी के आरम्भकाल मे "आदर्शवाद" को पुन: स्वीकार किया । आदर्शवादी हिन्दी साहित्य मानवीय जीवन की संचेतनाओं के लिए प्रेरक है मृत्युमुखी नहीं । आदर्शवाद में विश्वास का संचारण है , आशा का संचार राष्ट्र के प्रति ईमानदारी है, जीवन के प्रति निष्ठा है, आस्थाओं का मूल्य है [32].

"आदर्श" बौद्धिक दृष्टि है , जो जीवन के सूक्ष्मतम मूल्यों को महत्व देती है । यह भौतिक मूल्यों पर बल न देकर आध्यात्मिक मूल्यों से संबंधित मूल्यों की सृष्टि में योगदान देता है । "यथार्थ" और "आदर्श" आपस में सम्पृक्त हैं [33]. आदर्श जीवन के निरपेक्ष सत्य का बालक है और यथार्थ जीवन की सापेक्ष का जनक है । अन्योन्याश्रित होते हुए जीवन-मूल्य के लक्ष्य की सृष्टि करते हैं [34]. यथार्थ सत्य का पर्याय है । सत्यं शिवं सुन्दरम् शाश्वत मूल्य है । अत: असद्वृत्ति के बीच संघर्ष करना एवं सद्वृत्तियों के प्रतिरूपेण पक्षपाती ही "आदर्श" है [35]. मूल्य निर्माण में सहायक होने पर, वह स्वयं एक मूल्य है ।

मूल्यानुभूति :- (Feeling of Value)

वास्तव में मूल्यानुभूति मानवीय स्वतः प्रक्रिया में प्रवेश कर अनंत जीवन के तत्व ग्रहण करती है और वास्तविक जीवन में गहरी संवेदना की अनुभूति मूल्य में परिणत होती है । मूल्यानुभूति उपार्जित और स्थापित ऐसी प्रवृत्ति है जो किसीवस्तु या मानव के विपरीत प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है । यही प्रतिक्रिया स्वीकारात्मक मूल्य या निषेधात्मक मूल्य में परिवर्तित हो जाती है । प्रतिक्रिया या परिवर्तन मानव के दृष्टिकोण पर निर्भर होता है। मूल्यानुभूति"प्रतिमान" बनने पर मूल्य का रूप धारण करती है और यह मूल्य के आन्तरिक स्थायित्व में सहयोग देती है । मूल्यानुभूति चेतना दृष्टि से अत्यंत महत्त्व रखती है । यह प्रतिमान का रूप धारण करने से नवीन मूल्यों के उत्पादन में सहायक होती है । "मानवीय मूल्य की उचित कल्पना, आत्मनुभूति तथा आत्मसिद्धि के प्रत्यय को सम्मिलित किये बिना नहीं रह सकती है [36]. मूल्यानुभूति केवल मूल्य का आलोकिक पक्ष है [37], जो व्यक्ति के अभावों ,अभिलाषाओं एवं तज्जनित तनावों से लक्ष्य की सृष्टि करती है । लक्ष्य एक धारण है, जिससे चुनाव और चुनाव से आदर्श तथा आदर्श से प्रतिमान की सृष्टि होती है और आन्तरिक रूप धारण करने पर प्रतिमान मूल्य बन जाते हैं । अतः यह कहा जा सकता है कि मूल्यानुभूति भावात्मक, संवेदनात्मक एवं आन्तरिक प्रतिक्रियायें हैं, जो व्यक्ति की अनुमोदित अभिलाषाओं, आधारभूत आवश्यकताओं तथा सामाजिक परिवेशगत तनावों से लक्ष्य की सृष्टि होती हैं । मूल्यानुभूति मूल्य रचना में सहायक होती है ।

प्रतिमान :- (Pattern)

मनोविज्ञान में "प्रतिमान" को एक मानक अथवा सिद्धान्त माना है जो अन्तिम निर्णय देता है । आज की साहित्य समीक्षा , जब तक जीवन-मूल्यों की रचना का "प्रतिमान" नहीं बनता है , तब तक उसका अस्तित्व

न तो रचना के संरक्षण के लिए माना जा सकता है और पाठक के मानसिक मार्ग दर्शन के लिए ही उपयोगी हो सकता है [38]. प्रतिमान में किसी भी वस्तु के लिए जो प्रतिक्रियायें उदभूत होती हैं, उनमें स्थायित्व पाया जाता है ।

किसी व्यक्ति के चरित्र, अच्छाई, व्यवहार अथवा आचरण, सामाजिक कार्य संबंधी सिद्धान्त आदि से प्रतिमान का निर्माण होता है [39]. यह व्यक्ति के चरित्र एवं उसके व्यवहार का परिज्ञान कराता है । नैतिकता एवं प्रतिमान का अविच्छन्न संबंध है और यह अच्छाई, प्रेम, पवित्रता तथा मानवीय सौन्दर्य का अन्वेषण एवं नियोजन करता है ।

"प्रतिमान" के निर्मित होने के पश्चात् ही जीवन-मूल्यों का अभ्युदय एवं स्थायित्व सम्भव हो सकता है । इसमें मूल्यों की आन्तरिक स्थिति भी निहित है [40]. प्रतिमान मूल्य चेतना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है । संरचना में संश्लिष्टता जितनी अधिक होगी, कलात्मक दृष्टि से उतनी ही अधिक श्रेष्ठ होगी । यह कला का रूपवादी "प्रतिमान" है [41]. अतः "प्रतिमान" मूल्य निर्माण की अन्तिम स्थिति व निर्णय है, जो मूल्यों के निर्माण एवं स्थायित्व में विशेष स्थान रखते हैं ।

संकल्प :- (Will)

संकल्प किसी व्यक्ति-विशेष की उपार्जित की गई, ऐसी मूल्य प्रवृत्ति है, जो किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रतिकूल प्रतिक्रिया उद्भूत करती है और ये ही प्रतिक्रियाएं किसी व्यक्ति के प्रति परिस्थितिवश "अस्तिमूल्य" और "नास्ति मूल्य" में बदल जाती है, जिनमें स्थायित्व का भाव अधिक विद्यमान रहता है । "मूल्य" स्पष्ट अथवा अस्पष्ट रूप से व्यक्तिगत परिधियों में या सामुदायिक विशेषता के नाते एक ऐसी वांच्छित संकल्पना है , जो उपलब्ध लक्ष्यों, साधनों एवं साध्यों के चुनाव को प्रभावित करती है [42].

संकल्पनात्मक अनुभूति से उनकी आत्मा की मर्मज्ञ शक्ति की उस असाधारण अवस्था से है, जो श्रेय सत्य को उसके मूल चारूत्त्व में सहसा ग्रहण कर लेती है [43].

मानव संकल्प के नियंत्रण में "मानव के समस्त व्यक्तित्त्व से अभिव्यक्त संकल्प में" ही मूल्यों की स्वीकृत स्थिति है । डा0 दयाल शर्मा के अनुसार, "जिससे मूल्यों के गतिशीलता होने एवं मनुष्य के सर्वोच्च सर्जक होने का परिचय मिलता है ,विश्व में व्याप्त समस्त अच्छाई एवं बुराई, सत्य , असत्य सभी शक्ति के संकल्प का परिणाम है । व्यक्तियों के संकल्प में परिवर्तन शीलता के कारण सभी स्थापित मूल्यों के निर्मल्यीकरण के आवश्यक साधन हैं ।इससे शक्तिशाली संकल्पों के सहारे श्रेष्ठ मूल्य स्वत: स्थापित हो जाते हैं ।"[44] साथ ही आत्मानुभूति के प्रयासों में संकल्प कार्य धारण करती है ।[45]

अत: संकल्प मानवीय पूर्णत्व के प्रयास तथा संकल्प के आन्तरिक पक्ष में ही मूल्य का स्वरूप निहित है । व्यक्ति विशेष की अभिलाषाओं लक्ष्य, चारित्रिक विशेषाताओं, आदर्श, जीवन के लिए महत्वपूर्ण संकल्प , प्रतिमान बनने की प्रक्रिया से गुजरती हुई मूल्य का रूप धारण कर लेती है । "वास्तव में मूल्य" समाज के जीवन में सामाजिक, धार्मिक और नैतिक पृष्ठभूमि के लिए एक ऐसी वैचारिक ईकाई है , जिसका विकास व्यक्ति से समाज की ओर होता है । उसके साथ हमारा मानसिक संबंध स्थापित हो जाता है , जिसके आधार पर हम औचित्य-अनौचित्य का निर्णय करते हैं और जिसका अनुसरण करते हुए समाज का जीवन व्यवस्थित रूप से चलता है और हम सुख का अनुभव करते हैं । मूल्य मानव जीवन के कुछ ऐसे लक्ष्य हैं, जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त कर आलक्षित रूप में हमारे आचरण का संचालन करते हैं ।"[46]

जीवन मूल्य वह वैचारिक ईकाई है या वह सिद्धान्त या वह धारणा है , जिसके लिए हम अपने जीवन का कोई खण्ड मूल्य या कीमत के रूप में चुकाते हैं , या दुख व जोखिम उठाते हैं । जैसे - "सत्य" के लिए यदि कोई

राजपाट त्यागता है या उच्च पद त्यागता है , तो सत्य उसके लिए सबसे बड़ा "मूल्य" है । या कोई व्यक्ति ईमानदारी के पीछे बड़ी से बड़ी हानि उठाता है तो उसके लिए "ईमानदारी" मूल्य है । यही मूल्य की परिभाषा है, यही मानव का जीवन दर्शन हो सकता है ।

जीवन-दर्शन एवं जीवन-मूल्य

"जीवन-दर्शन" शब्द का दर्शन "दृश" धातु में ल्युट् प्रत्यय के योग से बना है , जिसका अर्थ है - दृष्टि विशेष से जीवन का शुद्धीकरण या निखारना ।[47] जीवन के समस्त कार्य व्यापार को मूल रूप से अव्यक्त रहस्य को आभासित करना ही दर्शन है । जीवन दर्शन एक ही उद्देश्य के परिणाम हैं । दर्शनशास्त्र का जीवन से अति घनिष्ठता है । दोनों का चरम लक्ष्य एक ही बिन्दु है । नि: श्रेयस अन्वेषण करना , उसी का सैधान्तिक रूप दर्शन है और व्यवहारिक रूप जीवन है । जीवन की सर्वांगीणता के निर्णायक जो सूत्र तत्व हैं , उन्हीं की व्याख्या करना , दर्शन का अभिप्रेत है ।"[48] कुंज के शब्दों में --"दर्शन-विचार का पूर्ण विकास तथा सम्पूर्ण प्रकृति का ज्ञान है ।[49]

दर्शन की सम्बन्ध सत् (Being) और संभूति (Becoming) दोनों से ही है । मानवनित्यता (Eternity) और अनित्यता दोनों का अनुभव करता है । मनुष्य के समस्त अनुभव की व्याख्या के रूप में दर्शन सर्वांगीण सत्य का अन्वेषण है । अपने मूल में यह भौतिक , आदर्श मूलक एवं यथार्थ परक है । इन्हीं तीन दृष्टियों पर दार्शनिक चिन्तन आधारित रहा है । भौतिक दर्शन चिन्तक द्रव्य को सत्य मानता है ।"[50] आदर्शवादी,मनस एवं चेतना को परम सत्य एवं परम तत्व तथा भौतिक द्रव्यों को इससे उदभूत मानता है ।[51] आदर्शवाद जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक विकास है । आत्मा और परमात्मा के एकत्व से मोक्ष की प्राप्ति जीवन का लक्ष्य या मूल्य है । आदर्शवाद सत्यं शिवं सुन्दरम् को निरपेक्ष गुण मानता है, जो अपने आप में पूर्ण है तथा वांछनीय है । व्यक्ति सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु है तथा वह

ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति है । शंकराचार्य जी जीव को ब्रह्म घोषित करके उसकी सर्वोच्चता को स्वीकार किया है ।[52]

आध्यात्मिक मुक्ति के लिए मानव जीवन का नियमन आवश्यक है । धर्म नियमन का माध्यम है । किसी वस्तु के प्रति जिज्ञासा रखना ,यह एक दार्शनिक तत्व है । और जिज्ञासा का अर्थ ज्ञान की इच्छा (ज्ञातुंइच्छा) है जो हमें जीवन के प्रति जगह नये अन्वेषणों , अनुसंधानों और आविष्कारों में प्रवृत्त करती है । ये सभी नयी प्रक्रिया एवं प्रवृत्तियों से हमें नये ज्ञान की प्राप्ति, नये जीवन दर्शन उपलब्ध होते हैं । जीवन की मीमांसा करना ही दर्शन का एक मात्र ध्येय है । अतः यह जीवन का एक दृष्टिकोण है ।

दर्शन मानव जीवन के व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही अवस्थाओं को प्रभावित करते हैं क्योंकि बिना दर्शन के जीवन को व्यतीत करना असम्भव है ।[53] आर•डब्लू• सेलर्स दर्शन को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि "दर्शन उस निरन्तर प्रयास को कहते हैं, जिसके द्वारा हम अपनी और संसार की प्रकृति के संबंध में श्रमबद्ध ज्ञान द्वारा एक सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं ।"[54] दर्शन का अर्थ अमूर्त चिन्तन करने के उस प्रयास से है ,जिसके द्वारा आत्मा , ईश्वर प्रकृति तथा सम्पूर्ण जीवन का रहस्य उदघाटित किया जाता है ।

"दर्शन" को प्रायः अंग्रेज़ी के "फिलोसफी" (Philosophy) शब्द का पर्याय माना जाता है । यह यूनानी भाषा के "फिलोसोफस" (Philosophose) शब्द के योग से बना है । यह भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करता है । (Philos) फिलोस और सोफस (Sophos) दो पदों संयुक्त है । फिलोस (Philos) का अर्थ है "प्रेमी" एवं सोफस (Sophos) का अर्थ है बुद्धिमान (Wise) । भारतीय दार्शनिकों ने दर्शन को समस्त वस्तुओं का ज्ञान माना है ।[55] पाश्चात्य विद्वान अरस्तू ने "दर्शन प्रकृति के विस्तृत विचारों एवं दृश्यों की खोज माना है , जो वस्तुओं की एक पूर्ण एवं सार्वभौम व्याख्या का प्रयास है । दर्शन विज्ञान का सारांश एवं

उनकी पूर्णता है ।[56] शोवग्लर ‖Scherglar ‖ ने दर्शन को वस्तु का चित्रण माना है । [57]

जीवन मूल्यों को समझने के लिए सद्वस्तु की भारतीय दार्शनिकों ने यथार्थ रूप से परिपुष्टि की है । केवल सत्ता मात्र नहीं , बल्कि चैतन्य और आनन्द भी है ।[58] इस प्रकार यह मानव अनुभूतियों को संतुष्ट भी करता है और साथ ही दर्शन मानव मूल्य और सत्ता धर्म एवं विज्ञान का समन्वय करता है ।

पूर्ववर्ती पृष्ठों में सद्वस्तु , मूल्यानुभूति, आदर्श, प्रतिमान संकल्प तथा दर्शन आदि का जो संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है, उसके संबंध में यह उल्लेखनीय है, ये सभी जीवन मूल्यों के निर्माण में सहायक होते हैं । सत्-असत् विचार हमारी मानसिक चेतना संकल्प और आदर्शों का पल्लवन करती है । आदर्श और सत्-असत् विवेक मूल्यों को जन्म देता है । संकल्प से मनुष्य जागतिक व्यवहारों में प्रवृत होता है और उसका क्रमशः प्रभावी जीवन व्यवहारों के ि अभियान का प्रयास दृष्टिकोण का विकास करता है । जीवन विकास दृष्टिकोण ही एक प्रकार का दर्शन है , जो संकल्प का दूरगामी परिणाम ही नहीं अपितु आगामी संकल्पों का जनक भी है । इस प्रकार निर्मित जीवन विषयक दृष्टिकोण पुष्ट होकर जीवन मूल्यों को रूपाकार देते हैं । यह उल्लेखनीय है कि जीवन के व्यवहार युगगत परिस्थितियों की देन होते हैं । अतः पन्रिणामतः जीवन मूल्य देश और काल के अनुसार विकसित निर्मित या परिवर्तित होते रहते हैं ।

जीवन-मूल्यों का वर्गीकरण :-

जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं पक्षों से सम्बन्धित अनेक प्रकार के मूल्य होते हैं और जैसाकि लक्ष्य किया जा चुका है कि सामाजिक परिवेश द्वारा उनका विकास होता है । प्रत्येक समाज और संस्कृति की निजी

विशेषताएं होती हैं । ये विशेषताएं व्यक्तियों को संस्कारित करके उनमें जीवन मूल्यों का विकास करती हैं । मूल्यों का समष्टिगत रूप ही संस्कृति विशेष का महत्वपूर्ण एवं सशक्त पक्ष है । धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक , आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों मेंपरिवर्तन को गति और दिशा प्रदान करते हैं और इसके कारण परम्परागत मूल्य नया रूपाकार ग्रहण करते, अथवा काल गति से समाप्त प्राय होकर नये मूल्यों के विकास की आधार भूमि का निर्माण करते हैं । वैसे कुछ ऐसे शाश्वत मूल्य भी होते हैं, जो अनेक समाजों में एक से दिखाई देते हैं ।[59] किन्तु प्राय: यह देखा जाता है कि उनकी तात्विक समानता के बावजूद भी बाहरी विनियोजन भिन्न प्रकार का दृष्टिगोचर होते हैं । समाज शास्त्रियों ने जीवन-मूल्य संबंधी धारणाओं की व्याख्या में "मूल्य" को सामाजिक विषय का अंग और उससे संबन्धित मानते हैं । [60] मूल्यों का विकास व्यक्ति की सामाजिक संरचना के विकास से सम्पृक्त है और व्यक्ति समाज के विकास में योग देता है । सामाजिक दृष्टि से "मूल्य" व्यक्ति और समाज पर आधारित होते हैं । व्यक्तिगत मूल्य और सामाजिक मूल्य दो भागों में रखे गये हैं । व्यक्तिगत मूल्य भावनात्मक विकास, इन्द्रिय बोध, और जीवन संघर्ष का परिणाम है, जो समाज पर अपना प्रभाव डालता है । स्वातंत्र्य, अहिंसा, मोक्ष आदि इसी के अन्तर्गत आते हैं । सामाजिक मूल्यों में राजनीतिक तथा आर्थिक को सम्मिलित कियाजा सकता है ।

पूर्ववर्ती विवेचन में हम लक्ष्य कर चुके हैं कि जहां एक ओर अनेक विद्वान अस्मगत मूल्यों की स्वीकारते हैं, दूसरी ओर " संकल्प" या अभिलाषा को महत्व देते हैं । प्रो० सोरले द्वारा निर्दिष्ट आध्यात्मिक मूल्य को इसी कोटि में रखा जा सकता है । इसप्रकार कहा जा सकता है कि मूल्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं । मूल्य मानक या मापदण्ड हैं --- या न्यों कहे यह एक दृष्टिकोण है ~~जिससे~~ इससे व्यक्ति की अच्छाई और चरित्र संबंधी तत्वों को मापा जा सकता है । मूल्य मापन की एक कसौटी है जो मनोवैज्ञानिक ,

सामाजिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक ,तार्किक आदि के आधार पर कसी जा सकती है ।

अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर प्रभुत्व जीवन मूल्यों को इसप्रकार रखा जा सकता है ।

1- व्यक्तिगत मूल्य (Individual Value)
2- आध्यात्मिक मूल्य (Spiritual Value)
3- समाजगत मूल्य (Social Value)
4- राजनीतिक मूल्य (Political Value)

इसके अतिरिक्त जीवन मूल्यों को कई दृष्टियों से वर्गीकृत किया गया है । कुछ विद्वानों ने मूल्यों को साध्य और साधन दो वर्गों में विभाजित करते हैं । साध्य मोक्ष है अर्थात् जीवन मुक्ति है । यह आध्यात्मिक मूल्यों के अंतर्गत रखा जा सकता है और धर्म , अर्थ , एवं काम त्रिवर्ग इसके साधन हैं । पाश्चात्य विद्वान (Mackenjee) मैकेंजी ने स्वलक्ष्य और निमित मूल्य के रूप में व्याख्या की है । निमित्त मूल्य (Instruments Values) किसी अन्य वस्तु की प्राप्ति के लक्ष्य का साधन है । जैसे, जब हम बाढ़ पीड़ित व्यक्तियों की आर्थिक सहायता करते हैं तो यह मूल्य एक सापेक्ष तत्त्व होता है । "अर्थ" का मूल्य यही है कि वह जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है । अर्थात् व्यक्ति की अभिरूचियों या इच्छित वस्तुओं की पूर्तिमात्र है । अर्थ का मूल्य इस तथ्य पर आधारित है कि हम जीवन को मूल्यवान समझते हैं । अतः अर्थ निमित्त न होकर आत्माश्रय या आत्मविकास की ओर अनुप्रेरित करता है । कांट तो शुभ संकल्प को ही स्वलक्ष्य मूल्य स्वीकार करता है ।[61] व्यक्ति के समाज के प्रति शुभ संकल्प ही नैतिक मूल्य होते हैं और नैतिक मूल्यों को स्वलक्ष्य कह सकते हैं । शुभ , औचित्य , कर्तव्य, पवित्र , शुचि दायित्व और नैतिक मूल्यों के अंतर्गत समाहित किये जाते हैं । इसलिए आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों को निमित्त मूल्यों के अन्तर्गत रखा जा सकता है ।

जीवन मूल्य विभाजन को सामाजिक दृष्टि से व्यक्ति तथा समाज को आचार मानकर व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यों में वर्गीत किये गये हैं । साथ ही पाश्चात्य विद्वानों ने सामान्यतर मूल्यों § Lower Values § और उच्चतर मूल्य § Higher Values § दो भागों में विभाजित किये हैं । सामान्यतर मूल्यों के अन्तर्गत आर्थिक, भौतिक, व्यक्तिगत ,राजनैतिक मूल्यों को समाविष्ट कर सकते हैं । उच्चतर मूल्यों में सौन्दर्यात्मक एवं नैतिक मूल्यों को रखा जा सकता है । इसमें लोक कल्याण की महत्ता स्वीकार की जाती है ।[62] इन द्विविध मूल्यों को पूर्वनिर्दिष्ट चारों मूल्य वर्गों में से प्रत्येक के अन्तर्गत रखा जा सकता है ।

मूलत: मूल्य हमेशा सृजनात्मक होते हैं , ह्रासात्मक नहीं । इन्हें किसी देश और काल की सीमा में बांधा नहीं जा सकता है । मूल्य सतत: जीवन दृष्टि के अनुसार विकसित होते रहते हैं । किन्तु विभिन्न परिस्थितियों, क्षेत्र, तथा परिवेश व व्यक्ति के कार्य कलापों द्वारा मूल्यों के अनेक वर्ग हो सकते हैं । हम भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वर्गीकृत जीवन-मूल्यों को समझने का प्रयास करेंगे ।

व्यक्तिगत मूल्य :-

"जो मूल्य व्यक्तिवाद के सीमित घेरे से परे, व्यक्ति को विकासोन्मुख करते हुए ~~एवं~~ उसे सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं, उन्हें व्यक्तिगत मूल्य कहते हैं" ये मूल्य किसी व्यक्ति की अभिलाषाओं, आकांक्षाओं , आवश्यकताओं, आदर्शों व संकल्पों, प्रतिमानों तथा संवेदनाओं से सम्बन्धित होते हैं, यथा- व्यक्ति स्वातंत्र्य, प्रेम, सद्भाव, ईमानदारी, अहिंसा, आत्मानुभूति आदि ।

व्यक्तिगत मूल्यों का अर्जन व्यक्ति आत्मविकास के लिए समाज से करता है । इसीलिए उसका संबंध परिवार व समाज से किसी न किसी रूप से अवश्य बना रहता है । वह प्रत्येक वस्तु से स्वतंत्र सत्ता रखता है । उसकी

यही प्रवृत्ति व्यक्तिगत मूल्यों का विकास करती है । अतः जैसाकि लक्ष्य किया जा चुका है कि जो मूल्य व्यक्ति के विकास एवं उन्नति क्रम में सहायक होते हैं, उन्हें व्यक्तिगत मूल्यों की श्रेणी में रखा जा सकता है ।

मनुष्य के व्यक्तित्व में अन्तर्निहित मानवता उसे संकीर्ण भावना से मुक्त करती है जो समष्टि में गतिशील होती है , किन्तु इसके बावजूद भी यह वैयक्तिक गुण भी है । इसीप्रकार उसकी "व्यक्ति स्वतंत्र्य" भावना व्यक्तिगत मूल्यों में समाहित की जा सकती है ।[63] साथ ही व्यक्ति विशेष की मानवता (मानव मूल्य) सामाजिक व्यवहारों में गतिशील होती है । ये व्यक्तिगत मूल्य सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों के विरोधी होते हुए भी एक दूसरे के पूरक हैं ।[64]

व्यक्तिगत मूल्यों के निर्माण और विकास में संस्कृति का भी विशेष योगदान रहता है क्योंकि वह अपने अंतरंग संस्कारों को समाज से ग्रहण करता है । डा0 मदन गोपाल गुप्त के कथनानुसार "प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार वैयक्तिक अनुभवों और समाज से प्राप्त संस्कारों पर निर्भर रहता है ।[65] संस्कार मानवदोषों को परिमार्जित करता हुआ दया, करूणा, सहानुभूति, सौहार्द्र , शिष्टाचार तथा आचरण आदि मूल्यों को भी उसमें सन्निविष्ट करता है । ये (व्यक्तिगत) मूल्य संस्कृति से जुड़े रहते हैं क्योंकि संस्कृति में व्यक्तिगत संस्कारों की प्रधानता रहती है , यथा- "आत्म-निरीक्षण, अनुशासन तथा निजी साधना द्वारा व्यक्तिगत दोषों का परिहार, आत्मशुद्धि तथा अपनी वृत्तियों तथा कार्यों को सन्मार्ग की ओर लगाता है ।[66]

संस्कार की उक्त विशेषता के कारण व्यक्तिगत मूल्यों को परम्परागत भी कहा जा सकता है किन्तु दृष्टिकोण के परिवर्तन से परम्परा के प्रति विद्रोह भी होता है । प्राचीन भारत में मनुष्य जन्म के साथ ही सामाजिक बन्धनों जैसे जाति-पांति ,परम्पराओं , धर्म एवं समाज से जुड़ा रहता था ।

इनमें बद्ध होकर वह अपने अस्तित्व की प्रतिष्ठा नहीं कर पाता था किन्तु अपने स्वार्थों या आत्मरति के लिए इन परम्पराओं को तोड़ भी नहीं सकता था । किन्तु आज के जीवन में परिवेशगत वह बन्धन शिथिल हो गये । एक तो विशेष परिस्थितियों तथा दूसरे आर्थिक जीवन की जटिलताओं के कारण व्यक्ति इन बन्धनों से दूर भागने लगा । वैज्ञानिक युग के स्वातंत्र्य चिन्तन ने भी उसे एक नई दिशा दी । व्यक्तिगत नये दृष्टिकोण उभरे और इनसे नये जीवन मूल्यों की सृष्टि हुई । विभिन्न देशों के सम्पर्क का मानव जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा और व्यक्तिवादी प्रवृति (जीवन मूल्यों) का जन्म हुआ । जहाँ एक ओर "व्यक्तिवाद" व्यक्ति को प्रमुखता देता है, वहीं समाज को गौण ठहराता है । उसका लक्ष्य बन गया - व्यक्ति की उन्नति । क्योंकि व्यक्ति की उन्नति से समाज की उन्नति स्वाभाविक है । इस प्रकार के दृष्टिकोण ने व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को व्यापक रूप से प्रभावित किया और व्यक्ति अपने विषय में सोचने लगा । इसमें व्यक्ति स्वातंत्र्य, मानव समानता, दायित्व बोध तथा नारी के प्रति उदार दृष्टि कोण बने ।

अत: हम कह सकते हैं कि वैयक्तिक मूल्यों में व्यक्ति स्वतंत्रता, साहचर्य मनोरंजनात्मक मूल्य, सौन्दर्य, चेतना , आदर्श , प्रेम , इन्द्रिय निग्रह, सहानुभूति, सद्भाव, अहिंसा , मोक्ष , आत्मज्ञान, धैर्य , साहस, ईमानदारी तथा काम संबंधी अवधारणाओं से विकसित "मूल्य" इसी वर्ग में आते हैं । इन मूल्यों का विकास सांस्कृतिक विघटन के कारण होता है । व्यक्तिगत मूल्य भौतिक मूल्यों के विकास में सहायक होते हैं । व्यक्तिगत मूल्यों के अन्तर्गत आध्यात्मिक मूल्यों का विकास देखा जा सकता है और ये मूल्य व्यक्तिगत दायरों में विकसीत, निर्मित और परिवर्तित होते रहते हैं । यहाँ हम आध्यात्मिक मूल्यों पर प्रकाश डाल रहे हैं ।

आध्यात्मिक मूल्य :-

आध्यात्मिक शब्द की निष्पत्ति "अध्यात्म" ठञ् प्रत्यय के योग से

वृद्धि करना है । आध्यात्मिक का अभिप्राय:, आत्मा, मन एवं ईश्वरीय सत्ता से संबंधित है ।[67] इसलिए आध्यात्मिक मूल्य व्यक्ति की आन्तरिक संवेदनाओं, संकल्पों एवं अवधारणाओं से संबंधित है, जो शरीर ,मन, आत्मा को आध्यात्मिक जगत् की ओर प्रेरित करके , परम चिरंतन मूल्यों की स्थापना करते हैं । आध्यात्मिक मूल्य मोक्ष का मार्ग है । भारतीय चिन्तकों ने आध्यात्मिक मूल्यों को अन्तिम मूल्य या परम मूल्य माना है । आध्यात्मिक क्षेत्र में भारतीय संस्कृति में यह स्वीकार किया गया है कि "जीवन का अन्तिम लक्ष्य मुक्ति प्राप्त करना है और जब तक उसकी प्राप्ति नहीं हो जाती व्यक्ति बारम्बार जन्म लेता तथा प्रत्येक जन्म में प्रयत्न करते हुए उस दिशा में आगे बढ़ता रहता है ।"[68] आध्यात्म साधना से संबंधित जीवन को स्थायी और सुखमय बनाना । यह आत्म समर्पण नहीं बल्कि आत्मसंख है । दुख, पाप तथा जन्म मरण सांसारिक अवस्थाओं को पार कर, उस मंगल , आनन्दमय अवस्था की प्राप्ति है । आध्यात्मिक धर्म का स्वरूप है , बिना अध्यात्म के कर्मों का अनुष्ठान व्यर्थ है ।[69]

आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना में कबीर, तुलसी, ज्ञानेश्वर ,स्वामी विवेकानन्द आदि महापुरूषों ने विशेष योगदान दिया और जीवन का सार और कल्याण इन्हीं मूल्यों में देखा है । डा० मदन गोपाल गुप्त के शब्दों में - "भारतीयों ने भौतिक क्षेत्रों में यथेष्ठ उन्नति करके जीवनगत चरम साध्य आध्यात्मिकता को स्वीकार किया है ।"[70] अध्यात्म साधना ही अनंत शक्ति की सत्ता का साक्षात्कार करा सकती है । "भारतीय जीवनादर्शों में लोक मंगल के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग, सत्य, अहिंसा, तप तथा संयम आदि आध्यात्मिक महत्त्व ईश्वरीय न्याय पर विश्वास एवं परलोक के निर्माण की चिन्ता आदि मूल्यों पर आत्मकेन्द्रित हुए क्योंकि जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष करने से था ।"[71]

अत: मोक्ष के अन्तर्गत त्याग, तपस्या, भक्ति, दान, संयम आदि आते

हैं । व्यक्तिगत और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास सामाजिक परिवेश में होता है , जिनके अतिरिक्त सामाजिक मूल्य अन्य अनेक जीवन पक्षों का उजागर करते हैं , अतः उनपर विचार किया जा रहा है ।

समाजगत मूल्य :-

समाजगत मूल्य व्यक्ति के उन संकल्पों, प्रतिमानों , आदर्शों और अभिवृक्तियों से संबंधित होते हैं , जो मानवता, समाज, तथा राष्ट्र की व्यापक सीमा को गतिशील करते हैं - ये समाजिक स्तर पर जनकल्याण व हित के कार्य स्थापित करते हैं । ये मूल्य समस्त मानवीय क्रियाओं का प्रतिरूप है । सामूहिक जीवन की पद्धति , परम्परा तथा व्यवस्था से , ये मूल्य हमें प्राप्त होते हैं और बदलती हुई परिस्थितियों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन के कारण ये नये रूप में विकासशील होते हैं । समाज में सामाजिक मूल्य मर्यादा और आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित होते रहते हैं ।[72] अतः समाजगत मूल्य व्यक्ति चेतना तक ही न सीमित रहकर अपितु सामाजिक चेतना जन्य मूल्यों को भी ग्रहण करते हैं और समष्टि के कार्य कलापों आचार-विचारों तथा व्यवहारों का बोध कराते हैं ।

यह उल्लेखनीय है कि समाज और व्यक्ति परस्पर पूरक होने के कारण सामाजिक मूल्यों की सृष्टि में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । व्यक्ति समाज में रहकर सामूहिक जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित करता है और दायित्व के निर्वाह के साथ ही व्यक्तित्व का विकास करता है और वह समाज में रह कर प्रेम, सद्भाव, अहिंसा, सत्य एवं नैतिक आचरण संबंधी पूर्व निर्दिष्ट मूल्यों को ग्रहण करता है ।

इसीलिए हम कह सकते हैं कि समस्त मूल्य तथा संस्कृति समाज की ही देन है और सामाजिक मूल्यों के निर्माण व विकास में सांस्कृतिक परम्परा

का योगदान रहता है , जो समाज की परम्पराओं द्वारा निर्मित होते रहते हैं । प्रत्येक विचारधारा का आधार समूह या समाज होता है ,अत: इसे मूल्यों का स्रोत कहा जा सकता है । स्पष्टत: "सामाजिक मूल्य एक व्यक्ति के मूल्य नहीं है,वरन् यह तो सभी सदस्यों के मूल्य होते हैं ।"[73] यथा - दाम्पत्य जीवन में मातृत्व-पितृत्व, सन्तान कामना, वात्सल्य की भावना, प्रेम ,ममता, आज्ञा पालन सम्मान, मर्यादा, त्याग आदि शाश्वत मूल्य आते हैं । साथ ही सद्भाव, परोपकार ,सामाजिक उत्सर्ग, समाज सेवा, संगठन, सहयोग आदि अभिवृत्तियों को वैयक्तिक नैसर्गिक रूप से समाज से प्राप्त करता है । यही सामाजिक मूल्यों की स्थिति व्यक्ति के व्यवहारों, संबंधी आचारों-विचारों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं, लोकविश्वासों, मान्यताओं तथा आदर्शों को प्रभावित करता है । क्योंकि ये सामाजिक परम्परायें उसे उत्तराधिकार में प्राप्त हो जाती हैं । किन्तु इसके साथ ही वह निकटवर्ती मनुष्यों के रीति-रिवाज रहन-सहन, खान-पान , आचार-विचार तथा जीवनादर्श से प्रभावित होकर मूल्य ग्रहण करता रहता है । अत: उक्त सभी तत्वों से निर्मित सामाजिक, सांस्कृतिक परम्परा मानव विकास में सहायक होते हैं । "समाजगत मूल्य" एक मापदण्ड है, जो सामाजिक प्राणियों को संवेदनाओं, क्रियाओं तथा विचारों को आकर्षित करते हैं, जो हमारे लिए मान्य हैं,जो परम्पराओं द्वारा निर्मित होते हैं, जो समाज द्वारा निर्धारित किये जाते हैं यथा- हिन्दू संस्कृति में सजातीय विवाह को मान्य समझा गया है । इस मान्यता का उल्लघंन करने में समाजिक मूल्यों का विघटन होता है और जो सत्य, आदर्श , पवित्रता, न्याय, त्याग, परोपकार, आदि समाजिक मूल्यों का पालन करता है । वह व्यक्ति समाज द्वारा प्रशंसित होता है ।

व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप सामाजिक मूल्यों का निर्माण एवं विकास होता रहता है । इसीलिए समाज व्यवस्था को बनाये रखने के लिए उसके सामूहिक जीवन से सम्बन्धित नैतिक मूल्य, मान्यताएं,

आदर्श और मर्यादाएं होती हैं । व्यक्ति उक्तपरिवेश के बीच रहकर उनके संस्कार ग्रहण करता रहता है । सामाजिक , आर्थिक और धार्मिक परिस्थि-तियाँ इस परिवेश का निर्माण करती हैं । साथ ही वे सामूहिक दृष्टिकोण को विकसित करती हैं । ये दृष्टिकोण समाजगत मूल्यों को रूपायित करते हैं। इससे स्पष्ट है कि युगीन परिस्थितियाँ सामाजिक जीवन मूल्यों के निर्माण परिवर्तन एवं विकास के लिए उत्तरदायी हैं । अतः इससे आधुनिक युग के सामाजिक जीवन मूल्यों के विकास में यदि विचार किया जाय तो युगीन परिस्थितियों के कारण सामाजिक मूल्यों में परिर्वतन आये । ये परिवर्तन पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता के कारण उभरें । इन सामाजिक जीवन मूल्यों में परिवर्तन वैज्ञानिक विकास, औद्योगीकरण,नगरीकरण , मशीनीकरण, आदि विषमताओं के कारण आया । साथ ही जनतांत्रिक मूल्यों ने सामाजिक जीवन एवं आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित किया । उक्त विवेचन के अनुसार हम कह स सकते हैं कि "समाजगत मूल्यों" के अन्तर्गत समाजसेवा, जन कल्याण, मानवता, उत्थान की प्रवृत्ति , समन्वयात्मक मूल्य, सहयोग, समाजप्रेम , श्रम, चरित्रात्मक जातिप्रेम , सौहार्द्र आदि सामाजिक मूल्य आते हैं । साथ ही सामाजिक मूल्यों के अन्तर्गत राजनैतिक मूल्य भी आते हैं । व्यक्तिगत और समाजगत जीवन मूल्यों के विघटन में राजनैतिक मूल्यों का भी विशेष प्रभाव रहा हैं । अतः इनका यहाँ अनुशीलन किया जा रहा है ।

राजनीतिक मूल्य :-

"राजनीतिक मूल्य" राजनीतिक चेतना से संबंधित होते हैं, जो हमें विरासत में मिले हैं । राजनीति (राज और नीति) दो शब्दों के योग से बनी है, इसका अभिप्राय: राज्य की नीति से, व्यवस्था से, राज्य प्रणाली से या राजतंत्र से है और "नीति" के अर्थ में नेतृत्व, आदेश, व्यवस्था, देखभाल नैतिक आचरण, आचार विधि, कार्यप्रणाली, औचित्य , मर्यादा, कूटनीति,

व्यवहार, कुशलता, राजनैतिक बुद्धि, राजनीति विज्ञान योग्यता, भेंट संबंध तथा समर्थन[74] आदि सभी क्रिया कलाप समाविष्ट होते हैं । इसके अतिरिक्त राजनीतिक चेतना का अर्थ है - ज्ञान मूलक मनोवृत्ति । युगीन संदर्भ में यह चेतना समस्त सवेदनात्मक , सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर वैचारिक मानसिकता है और इसका संबंध नीति से है जो समाज और देश की व्यवस्था को अनुशासित करती हुई , किसी विशेष भौगोलिक खण्ड के व्यापक हित का ध्यान रखती है । साथ ही देश को सुव्यवस्थित करती हुई अर्थ व्यवस्था को संतुलित बनाये रखती है । इसमें राष्ट्र तथा समाज के हित और कल्याण के कार्य किये जाते हैं । इसी अर्थ में राजनीतिक मूल्यों का प्रयोग किया जाता है । अत: देश-प्रेम, सद्भाव, सहयोग, राष्ट्र प्रेम , देश-सेवा , देश के लिए त्याग, समानता , प्रजातंत्र के मूल्य, स्वतंत्रता , बंधुत्व , मैत्री, पंचशील तथा सह - अस्तित्व आदि राजनीतिक मूल्यों के अन्तर्गत समाहित हो सकते हैं ।

बीसवीं शताब्दी के दौरान कुछ ऐसी राजनीतिक क्रान्तियाँ हुई , जिनके फलस्वरूप अमरीकी महाद्वीप के देश जनतान्त्रिक और राष्ट्रीय सरकारें स्थापित कर रहे हैं । उद्योगों का विकास तथा यूरोपीय राजनैतिक चेतना से एक नयी समाज व्यवस्था स्थापित की हुई फ्रांसीसी ने विश्व को आधुनिक जनतंत्र प्रदान किया और व्यक्ति को राजनीतिक अधिकार मिले । इससे नागरिक अधिकार भाषण, लेखन , स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता, कानून के लिए न्याय रक्षा आदि संवैधानिक अधिकार मिले । पूंजीपति और श्रमिक वर्ग बना । समानता प्राप्ति के लिए राजनैतिक आन्दोलन हुये, समान हितों की रक्षा के लिए श्रमिक संघ तथा मजदूर संघों की स्थापना हुई । अठाहरवीं और उन्नीसवीं शत० में सामाजिक अर्थ व्यवस्था संसार में आई थी, उसे पूंजीवाद की संज्ञा मिली । इसके स्थान पर समाजवाद की नई स्थापना हुई । समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत उत्पादन के समस्त साधन सामान्य लोगों का अधिकार हो । इस

समाजवादी विचारधारा का प्रभाव राजनैतिक मूल्यों पर पड़ा । यही नहीं अनेक बहुविध विचारधाराओं के होने से आज हमारा देश राजनीतिक संघर्ष का अखाड़ा बना हुआ, जो क्षैत्रीय, प्रान्तीय, दलगत आदि से संबंधित है ।

स्वतंत्र भारत की बागडोर जनता के हाथों में आ गई है । अतः लोकतंत्र में जनता की सरकार होती है । इन संवैधानिक अधिकारों ने व्यक्ति के आत्मविश्वास को जगाया और समाज के पीड़ित तथा पिछड़े हुये वर्गों में एक नयी राजनीतिक चेतना आई । आज का ग्रामीण वर्ग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है । अपने अधिकारों की मांगों के लिए शहर व गांव में नित्य नये संघर्ष हो रहे हैं । श्री ए0आर0देसाई के कथनानुसार --"वास्तव में ग्रामीण कृषकों के मध्य उत्पन्न राजनीतिक जागरूकता और उनके दिनोंदिन बढ़ते हुए राजनीतिक क्रियाकलाप आज के मानवीय राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण पहलू हैं ।"[75] इससे नौकर वर्ग तथा मजदूर वर्ग में एकता एवं चेतना आई ।

साठोत्तरी युग में राजनीतिक चेतना का विकास विविध आयामों में हुआ । वैज्ञानिक विकास के साथ साथ राष्ट्रीय चेतना का हुआ । राजनीतिक गतिविधियों के कारण एक नया समुदाय- मध्यवर्ग सामने आया । आज राजनीति युग है । स्वतंत्रता से पूर्व हमारे सामने "स्वतंत्रता" प्राप्ति का लक्ष्य था और यह समाज व जनकल्याण परक थी, किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थों के दलदल में फंसी हुई है । आज के नेता स्वकल्याण में परहित को भूल गये हैं । इससे राजनीतिक जीवन-मूल्यों में परिवर्तन आया । आज अनेक वादों का जन्म हो रहा है । युग बदल रहा है और इसके साथ साथ हमारी मान्यताओं, धारणाओं तथा परम्परागत जीवन-मूल्यों में भी परिवर्तन आया । इस राजनैतिक परिवर्तन ने व्यक्तिगत ,समाजगत, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावित किया । राजनीतिक चेतना ने समाज के सभी वर्गों को नागरिक मताधिकार दिये और व्यक्ति प्रतिष्ठा और विकास करने का सुअवसर मिला, साथ समाज में फैली जाति, धर्म, कुप्रथाओं तथा अन्य कुरीतियों में परिवर्तन आया ।

अतः देश-सेवा, एकता, राष्ट्रीयता, आरक्षण, अछूतोद्धार, मातृ भूमि प्रेम, नारी समानता, प्रजातंत्रात्मक , या लोकतन्त्रात्मक मूल्य, साम्यवादी और समाजवादी मूल्य , गांधीवादी मूल्य , न्याय, सहिष्णुता, राजनैतिक जीवनादर्श आदि राजनीतिक मूल्य में आते हैं । आज राजनीतिक चेतना ने धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का पतनोन्मुख किया और साथ ही मानव मूल्यों को भी प्रभावित किया ।

निष्कर्ष :-

पूर्ववर्ती पृष्ठों में सामाजिक, दार्शनिक ,वैज्ञानिक, तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टियों से यह लक्ष्य किया गया है कि पाश्चात्य देशों में जीवन मूल्य संबंधी विषय पर अत्याधिक बल दिया गया है । "नीति शास्त्र" में जीवन मूल्य का विशेष स्थान रहा है और साथ ही पाश्चात्य देशों में जीवन मूल्यों को स्वतंत्र विज्ञान के रूप में स्वीकार ने तथा न स्वीकारने का विषय विवादास्पद रहा है फिर भी विद्वान इस विषय के महत्व को स्वीकार करते हैं ।

जीवन-मूल्य के लक्ष्य तथा कार्य के स्पष्टीकरण के लिए किये गये उपर्युक्त चार प्रकार के विवेचनों द्वारा उसका जो स्वरूप है निरूपित हुआ है , उसके अनुसार वह मानव जीवन को स्थायी ही नहीं अपितु अनेक महत्वपूर्ण उपादानों द्वारा उत्कृष्ट बनाने वाले समस्त व्यक्तिगत और समाजगत व्यवहारों, क्रिया-कलापों, आस्थाओं , विचारों तथा जीवनादर्शों का एक शक्तिशाली समूह है । जीवन-मूल्य मानव की समस्त आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं कीपूर्ति का साध्य और साधन है । हम पूर्ववर्ती पृष्ठों में यह निर्दिष्ट कर चुके हैं कि व्यक्तिगत मूल्य ही व्यक्ति के विकास में सहायक होते हैं और इन मूल्यों को वह समाज से अर्जित करता है । साथ ही समाज के आदर्शों , आचारों-विचारों तथा व्यवहारों से अपने संस्कारों को परिमार्जित तो करता है ही, किन्तु इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत मूल्यों द्वारा वह स्वंय ऐसे आचार-विचार तथा जीवनादर्श दे सकता है जोकि समाज का भी मार्गदर्शन करते हैं । अतः वह सामाजिक

आचार-विचार , सेवा, प्रेम, उदारता, सद्भावना, परोपकार , संगठन , त्याग आदि शाश्वत् मूल्यों को ग्रहण करता है ।

सामाजिक दृष्टि से पूर्ववर्ती पृष्ठों के आधार पर सामाजिक मूल्य समग्र संस्कृति, समाजगत आवश्यकताओं की पूर्ति ,सामान्यत: जन कल्याण के प्रति विशेष आकृष्ट मूल्यों से संबंधित हैं जो समाज को अर्थ एवं महत्ता प्रदान करते हैं । जीवन मूल्यों की चर्चा में वैयक्तिक अभिरूचियों की अपेक्षाकृत समाजगत रूचियों को स्वीकृति प्रदान करते हैं । इस दृष्टिकोण ने व्यक्तिगत और समाजगत जीवन मूल्यों को स्वीकारा है ।

उक्त विवेचन के आधार पर कह सकते हैं कि जीवन मूल्य न नष्ट होते हैं और न परिवर्तित । परिस्थितियों के साथ साथ जीवन बदलता है और इसके साथ साथ जीवन-मूल्य दृष्टि भी बदलती रहती है ।

साहित्य और जीवन मूल्य :-

साहित्य में व्यक्ति और समाज का चित्रण होता है । इसीलिए, जीवन मूल्यों को व्यक्ति और समाज से निरपेक्ष होकर नहीं समझा जा सकता क्योंकि साहित्य में समस्त मानवीय मनोवृत्तियों का वर्णन होता है । डा0 देवराज के मतानुसार, "साहित्य में हम कल्पना द्वारा ~~बकिल बकि~~ नवीन मनो-दशाओं की सृष्टि करते हैं । यह सृष्टि अपने से बाहर किसी चीज़ को प्रतिफलित नहीं करती, जैसाकि विचार सृष्टि करती है । एक तरह से हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिक सृष्टि की भांति कला सृष्टि का उद्देश्य भी किसी विषय का बोध प्राप्त करना है । किन्तु कला जिस वस्तु या यथार्थ का बोध खोजती है , वह यथार्थ स्वंय हमारा जीवन है, हमारा वैयक्तिक जीवन तथा सामाजिक जीवन । इसलिए कला सृष्टि का अपने युग तथा समाज से घना सम्बन्ध होता है ।"[76]

वस्तुत: "जब साहित्य जीवन से प्रसूत होकर जीवन को प्रभावित करता है , तो वस्तुत: उसकी खरी कसौटी भी जीवन ही है ।"[77] "साहित्य समाज-शास्त्र, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, नैतिक शास्त्र एवं सांस्कृतिक धारणाओं की विषय सामग्री है । युग के सामान्य परिवेश में रहने वाले व्यक्तियों में सामान्य मानसिक विशेषताओं की सामान्य प्रतिक्रिया उद्भूत हो जाती है , जोकि इस परिवेश के साहित्य में स्वभावत: अभिवृत्ति के रूप में अभिव्यक्ति होती रहती है और परिवेश समसामयिकता के कारण ये सामान्य एवं स्वभाविक मानसिक गुण बदलने से ही साहित्यिक परिवर्तन का कारण बनती है ।"[78] साहित्य की यह विशिष्टता रही है कि वह तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित होता रहा है । उन परिस्थितियों के अनुरूप ही प्रतिक्रिया होती है । परिणामत: एक जीवन दृष्टि की सृष्टि होती है । साहित्य युगीन समाज के मूल्यों को ग्रहण करता है । वह नवीन मूल्यों के विकास द्वारा समाज को गतिशील बनाता है । बाबू गुलाब राय के अनुसार - "साहित्य के मूल्य जीवन के मूल्यों से भिन्न नहीं हैं । अत:यह बात सर्वमान्य है कि जिसका जीवन में मूल्य है उसका साहित्य में भी मूल्य है ।"[79] साहित्य का आधार जीवन है । प्रत्येक काल में जीवन मूल्य बदलते रहते हैं । कालान्तर में जो नई भावना प्रकट होती है वही साहित्य में होती है , जीवन की तरह ही ।

साहित्यकार साहित्य में समाज का एक संश्लिष्ट चित्र उपस्थित करता है । अत: युग चेतना से उत्पन्न समाज के मूल्यों को ग्रहण करता है । और नये विकास से समाज का नया मार्ग प्रशस्त करता है । "इस युग में जनतंत्र-वादी तथा मानवतावादी भावना के प्रसार से साहित्य को एक नया रूप मिला है । साहित्य के क्षेत्र में एक बौद्धिक क्रान्ति हुई , जिसे प्रकृति-विज्ञानों ने एक नया रूप दिया और साहित्य ने उसे अभिव्यक्ति दी ।"[80] लेखक ने साहित्य और जीवन-मूल्यों के संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी भी लेखक की कृति में परम्परागत विचार प्रस्तुतीकरण में व्यक्तिगत अनुभूतियां होती हैं । जैसे- एक ही समय के लेखक की अनुभूतियां कुछ युग सापेक्ष रचना करती हैं, तो कुछ परम्परा के अनुरूप ~~निर्वाह करते हैं इसलिए~~ करती हैं और कुछ युगबोध को ध्यान में रखते हुए परम्परा के अनुरूप निर्वाह करते हैं । इसीलिए प्रतिपाद्य साहित्य में जीवन-मूल्य भिन्न-भिन्न स्वरूपों में मिलते हैं आधुनिक साहित्य में प्रतिपाद्य जीवन-मूल्य नये विकास में मिलते हैं । यथा - प्रजातंत्र, स्वातंत्र्य, नारी-सम्मान, अस्तित्व की प्रतिष्ठा आदि नये जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हुये । साहित्य में जीवन मूल्य का चित्रण होता है । यह विचारणीय है कि साहित्यकार नये जीवन मूल्य प्रतिपादित करने की क्षमता रखता है या नहीं । यह कह सकते हैं कि साहित्य में जीवन-मूल्य देता है , जिनमें मानव-मूल्यों का विशेष महत्त्व रहता है । जीवन-मूल्यों की चर्चा हमारे शोध प्रबंध में व्यक्तिगत ,समाजगत, राजनैतिक तथा आध्यात्मिक जीवन-मूल्यों के अन्तर्गत की जायेगी । वैसे साहित्यकार परम्परागत विकासशील तथा नये जीवन-मूल्य को लेकर चलता है - क्योंकि साहित्य में यथार्थ तथा आदर्श दोनों प्रकार के मूल्य भी मिलते हैं । आधुनिक हिन्दी साहित्य में अनेक विधाएँ पाई जाती हैं । जैसे - §1§ काव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य §2§ नाटक §3§ एकांकी §4§ कहानी §5§ उपन्यास §6§ रेखाचित्र §7§ संस्मरण आदि । इन सभी विधाओं ने साहित्य की सृष्टि की है । आधुनिक साहित्य के उपन्यासों में मानवीय जीवन का गहरा चित्रण मिलता है । इसलिए यह जान लेना आवश्यक है कि हिन्दी के साठोत्तरी उपन्यास साहित्य में मानव जीवन मूल्य किस रूप में अंकित हैं ।

हिन्दी के साठोत्तरी उपन्यास और जीवन-मूल्य :-

युगीन साहित्य में उपन्यास सशक्त विधा है । जिसमें मानवीय विचार, अनुभूति, मनोभाव, प्रेम, स्वप्न, कल्पना आदि की कलात्मक अभिव्यक्ति

होती है । उपन्यास में सामान्य मानव जीवन की समस्त क्रियाओं, व्यवहारों उसकी मान्यताओं और विश्वासों का सहज स्वभाविक चित्रण प्रस्तुत होता है । डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के शब्दों में - "मानव-मूल्यों एवं नैतिक मान्यताओं के फलस्वरूप हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक सर्वथा नया आयाम और नूतन दिशा प्राप्त हुई । समष्टिगत चेतना और व्यक्तिगत चेतना दोनों ने साथ ही दोनों के संघर्ष ने हिन्दी उपन्यास में सामाजिक सचेतना के प्रतिमानों को यथेष्ट सीमा तक प्रभावित किया ।[8] साथ ही कुछ सामाजिक विकृतियों आज के उपन्यासों में अस्पष्ट हैं क्योंकि नयी पीढ़ी एक प्रकार की मानसिकता के साथ अनेक विसंगतियों एवं बौद्धिक संक्रान्ति से गुजर रही है । और अनैतिकता से सांस्कृतिक तत्वों में तनाव आया । जिससे भटकाव, टकराव, निराशा, संत्रास, कुंठा, आदि दुर्बल प्रवृत्तियों का भी समावेश हो गया है । लेकिन उपन्यासकार स्वकृति में समाज की अनेक समस्याओं को सामाजिक, धार्मिक आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों में परखने का प्रयत्न करता है । इसलिए युगीन परिवेश में व्यक्ति विशेष की आचरण सम्बन्धी मर्यादाओं तथा मानव-मूल्यों की भी स्थापना करता है और उत्तरदायित्व तथा कर्तव्य भावना से प्रेरित सामाजिक सचेतना का भी चित्रण करता है ,इससे मानव मूल्यों की स्थापना तो होती ही है, परन्तु प्राचीन परम्परागत मान्यताओं एवं मूल्यों के विघटन से मानव मूल्य संकट में पड़ गये हैं । और पूर्वनिर्धारित मूल्यों के लिए परिवर्तित संबंध एक चुनौती के रूप में विद्यमान हैं । आज उपन्यास समाज चित्रण के लिए एक सशक्त विधा के रूप में है जिसमें मानव-मूल्यों , मर्यादाओं, आस्थाओं, प्रतिष्ठाओं एवं नैतिक मान्यताओं का चित्रण मूल्य हीनता की दृष्टि से हो रहा है । परिवेश से कटे व्यक्ति का चित्रण हो रहा है । व्यक्ति आज नये जीवन-मूल्यों तथा नये जीवन दर्शन की खोज में लगा हुआ है । इन सब का सम्यक् चित्रण समकालीन उपन्यासकारों की कृतियों में मिलता है ।

साठोत्तरी उपन्यासों में स्त्री पुरूष के संबंध में कटुता स्वच्छन्द यौन वृति नारी स्वतंत्रता, और नये दृष्टिकोणों का चित्रण मिलता है । अतः हम कह सकते हैं कि समकालीन उपन्यास में मानव मन को परखा गया है तथा यह उसकी संवेदनाओं, आकांक्षाओं , आवश्यकताओं तथा अभिरूचियों के विषय में बताता है । उपन्यास में संवेदनाओं ,विवशताओं आदि के प्रति सहानुभूति प्रकट की है । समकालीन लेखकों ने मानवीय झुंझलाहट, विवशताओं, असम्बद्धताओं, अजनबीपन के साथ साथ उसके व्यथित मन एवं कुंठित जीवन को गहराई से परखा है । जितना आज के उपन्यासों में व्यक्ति के कार्य कलापों, व्यवहारों , महत्वकाक्षाओं का चित्रण मिलता है , उतना शायद अन्य किसी विधा में न मिलता हो ।

कहना न होगा कि युगीन उपन्यासों में मानव-मूल्यों का विशद् चित्रण तो मिलता ही है , साथ ही आज के परिवेश में टूटते हुए जीवन मूल्यों का चित्रण भी मिलता है । तत्कालीन जीवन-मूल्यों का चित्रण आज के उपन्यासों में भी मिलता है । इन युगगत जीवन-मूल्यों का विश्लेषण हम अगले अध्याय में करेंगे ।

-::-

"संदर्भ :- सूची"

1- The word life is often used to denote the living creature's complete signance of activities and expensive throughout the period during which he is alive, it also used as a short word for what is almost always going on in connetion with living creatures their acting upon their invironment and reaching to it------ and it is of course quite clear and useful to say that life consists of action and reaction between organism and environment.

(Encyclopaedia of Relision and Ethics, Vol.'life' P.1)

2. Dictionary Thought Compiled by Edwards. P.341

3- हुकुम चन्द : आधुनिक काव्य में नवीन जीवन-मूल्य, पृष्ठ 5

4- डा० हरदेव बाहरी :- प्रसाद साहित्य कोश , पृष्ठ 164

5- श्री अरविन्द के कथनानुसार - जीवन एक सार्वभौम शक्ति का एक रूप, उसकी एक गतिशील प्रक्षेप अथवा धारा स्वीकारात्मक अथवा निषेधात्मक, उस शक्ति की सतत: क्रिया अथवा क्रीड़ा है, जोकि रूपों को बनाती है और उनके सार के विश्रृंखलन और प्रतिष्ठापन, स्थिरता और परिवर्तन, जीवन और मृत्यु सब एक ही जीवन की प्रतिक्रियायें हैं । सभी नवीन रूप धारण करते हैं, कुछ नष्ट नहीं होता । यह शक्ति के सुरक्षित रहने का नियम है, अव्यक्त , व्यवस्थित अथवा मौलिक, निर्वाहित अथवा विवर्तित जीवन सब जगह है । वह सार्वभौम और अविनाशी है केवल उसके रूपों और व्यवस्थाओं में ही अन्तर पाया जाता है । पौधे, पशु और मानव की जीवन में कोई मौलिक अन्तर नहीं है ।

डा० रामनाथ शर्मा : श्री अरविन्द का सर्वांग दर्शन, पृष्ठ 122

6- वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत-हिन्दी कोश, पृष्ठ 812

7- डा० हुकुमचन्द : आधुनिक काव्य में नवीन जीवन-मूल्य, पृष्ठ 7

8. R.K.Mukarji : The Social structure of Values. P.21

9. "Value is always connected not only with subject but specifically with life of the Subject"

(Lasky and Marchall : Value and existence.P.102

10. "Value is a certain relation specifically a mutual cumplementing existing between the object of value and the feeling of value" (by Heyde) (Lasky and Marchal value and existence. (.31)

11. Sorley Value and Idea of God. P.515

12. "The fact is however, that there is not such established and universal meaning. Different people mean different things in different contexts. The problem is not to discover a present meaning----- there are only too amany meanings."

(R.S.Persy, Contemporary Philosophy Problems. P.489

13. "Value as the fulness of being, God and the Kingdom of God as the foundation of Valuess" (Lasky and Marshal-Value and Existence. P.1)

14- कुमार विमल, मूल्य परिवर्तन : मानविकी के संदर्भ में आलोचना (अक्तूबर-दिसम्बर 1967) पृष्ठ 64

15. "They make value subjective and renounce the existence of absolute values" (Lasky and Marxhal-Value and Existence P.28)

16. Henry Prati Four child and others, Distionary of Sodiology and Related Sciences. P 331.

17- डा० रमेश चन्द लवानिया : हिन्दी कहानी में जीवन-मूल्य, पृष्ठ 3

18. H.M.Bhattacharya, The Principles of Philosophy. P 383

19. "Such a concept of value is not the same as the one commonly admitted, in the usual sense Value is attributed to an object only when there is somebody present for whom Value is Value (Lasky and Marshall-Value and Existence. P 31)

20. "The connection with the subject does not present some Values from being absolute. There are values that does not depend on the personal characteristics of the subject they are absolute" (Lasky and Marshall Value and Existence P.34

21. "Values are percieved not by theoretic but by emotional intertional function by the activities of feeling" (Lasky and Marshall -Value and Existence. P 34)

22. Brightman - Persons and Value . P 13

23. "It determines the meaning of the world as a whole as well as the meaning of every person, every event and every action." (Lasky and Marshall- Value and Existence. P 27)

24. जी०ई० मूर ऐलिक्स : पृष्ठ 101

25. डा० हेमेन्द्र बानेर्जी :स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में मूल्य सक्रमण,पृष्ठ-1

26. उपरिवद् , पृष्ठ 2

27. सच्चिदानंद वात्सायन: हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य,पृष्ठ 10 {संस्करण 1967}

28. हुकुमचंद : आधुनिक काव्य में नवीन जीवन-मूल्यएन् पृष्ठ-4

29. रामनाथ शर्मा : श्री अरविन्द का सर्वांग दर्शन , पृष्ठ 5

30. उपरिवद् , पृष्ठ 7

31. "Virtue and human wisdom in its perfect purity are ideas while the wiseman (of the stoics) is an ideal....."- Kant, Critique of Pure Reason, II P.450.

32. आचार्य उमेश शास्त्री : प्रसाद साहित्य में आदर्शवाद एवं नैतिक दर्शन पृष्ठ 188-1

33. उपरिवद्, पृष्ठ 188

34- उपरिवद् पृष्ठ 188

35- उपरिवद् पृष्ठ 188

36- "...... No adequate conception of human value can be formed without including the concept of self realization." 'W.M.Urban- fundamentals of Ethics. P 18)

37- (By meenong) (Lasky and Marshall-Value and Existence P 30

38- डा0 दिनेश :स्वाधीनता कालीन हिन्दी कहानी में जीवन-मूल्य,पृष्ठ 30

39- डा0 रमेश लवानिया : हिन्दी कहानी में जीवन-मूल्य , पृष्ठ 6

40- R.K.Mukarji : The demensions of Values. P 78

41- त्रिलोक चन्द तुलसी : परिवेश मन और साहित्य ,पृष्ठ 182

42- उद्धृत ﴾हुकुम चन्द : आधुनिक काव्य में नवीन जीवन-मूल्य , पृष्ठ 62

43- डा0 प्रेम प्रकाश गौतम । चिन्तन , पृष्ठ 59

44- डा0 दयाल शरण शर्मा :नीत्शे का मूल्य दर्शन परिषद् पत्रिका ﴾त्रैमासिक﴿ वर्ष 6,अंक 1, अप्रैल﴾1971﴿

45- 'The realization of a striving is act of will" (Lasky and Marshall Value and Existence. P 158)

46- डा0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 80

47- वाचस्पति गौरोला : भारतीय दर्शन , पृष्ठ 9

48- उपरिवद् , पृष्ठ 9

49- "Philosophy is the complete development of Thought" (Kunj : History of Philosophy P.1)

50- "Philosophy is elaboration of conception" (Ibid P.1)

51- आत्माराम शाह: आदर्शवाद, हिन्दी साहित्य कोश , भाग 1,पृष्ठ 105

52- ब्रह्म सत्यं जगद् मिथ्या, जीवों ब्रह्मैव नायर : §ब्रह्म ज्ञानावली पृष्ठ 20§

53- उद्धृत - शिक्षा सिद्धांत § एन0आर0स्वरूप सक्सेना§ पृष्ठ 279

54- उपरिवद् पृष्ठ

55- डा0 राजनाथ शर्मा : अरविंद का सर्वांग दर्शन पृष्ठ 5

56- "History of Philosophy - by Persy and Webber, Introduction Page 1.

57- "History of Philosophy-by Perry and Webber, Intoduction, Page 1.

58- डा0 राजनाथ शर्मा : अरविन्द का सर्वागदर्शन , पृष्ठ 93

59- R.K.Mukerji : The social structure of Values, P 9.

60- Values are part of subject matter of sociology, Johau F. Cuber : Sociology - A synopsis of Principles. P 51

61- डा0 ईश्वर चन्द्र शर्मा : पश्चमीय आचार-विचार का आलोचनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 184

62- हुकुम चन्द : आधुनिक काव्य में नवीन जीवन-मूल्य, पृष्ठ 65

63- "व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में अन्तर्निहित मानवीयता का §मानव मूल्यों के अर्थ में§ समस्त संस्कारों से मुक्त होकर अर्थवान करता है और क्योंकि इसका समस्त सामाजिक व्यक्तित्वों की समष्टि में ही गतिशील है । इस कारण इस स्वातंत्र्य के अन्तर्गत अन्य सभी व्यक्तियों के स्वातंत्र्य का भाव समन्वित है ।" दायित्व और स्वातंत्र्य अविछिन्न मूल्य सम्पादकीय आलोचना जनवरी 1956, पृष्ठ-2

64- उपरिवद्, पृष्ठ 2

65- डा0मदन गोपाल गुप्त : मध्यकालीन काव्य में भारतीय संस्कृति ,पृष्ठ 26

66- डा0 मदन गोपाल गुप्त :मध्यकालीन काव्य में भारतीय संस्कृति,पृष्ठ 33

67- वामन शिवराम आप्टे : संस्कृत हिन्दी कोश, पृष्ठ 28

68- डा0 मदन गोपाल गुप्त : मध्यकालीन काव्य में भारतीय संस्कृति पृष्ठ 53

69- डा0 देवराज, संस्कृति का दार्शनिक विवेचन , पृष्ठ 159

70- डा0 मदन गोपाल गुप्त: मध्यकालीन काव्य में भारतीय संस्कृति, पृष्ठ 54

71- ,, ,, ,, ,, पृष्ठ 53

72- डा0 देवराज - संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, पृष्ठ 168

73- डा0 हेमेन्द्र बानेकी - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास :मूल्य संक्रमण, पृष्ठ 12

74- वी•एस• आप्टे, दी प्रैक्टिकल संस्कृत इंगलिश, भाग 2, पृष्ठ 954

75- उद्धृत, डा0 ज्ञान चन्द गुप्त: स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास चेतना, पृष्ठ 20

76- डा0 देवराज, संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, पृष्ठ 173

77- गजानन माधव मुक्तिबोध, एक साहित्यिक की डायरी, पृष्ठ 126

78- त्रिलोक चन्द तुलसी :परिवेश : मन और साहित्य - भूमिका ।

79- बाबू गुलाबराय - साहित्य के मूल्य - साहित्य समीक्षा पृष्ठ 18

80- डा0 दिनेश (रामगोपाल शर्मा) स्वाधीनता कालीन हिन्दी साहित्य के जीवन-मूल्य (हरिवंश लाल शर्मा) पृष्ठ 12

81- डा0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 99

-::-